ૐકાર ફાઉન્ડેશન ટ્રસ્ટ
'માનવસેવા એ જ ઈશ્વરસેવા'
ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट

वर्ष-6 अंक : 101

सहयोग शुल्क : रु. 1 / जून : 2025

दिव्यांग सेतु

संपादक :- संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

काइल मेनार्ड संघर्ष के उस पार
छुपी सफलता का नाम है।

– संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

काइल मेनार्ड संसार में सभी के लिए
संभावनाओं का पर्याय है ।

– माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

निरामय हेल्थ पॉलिसी

पात्रता

- केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही यह पॉलिसी सेरेबल, पाल्सी, ऑटिज्म, मेन्टल रिटार्डेशन, मल्टिपल डिसेबिलिटीसे असरग्रस्त दिव्यांगो को मिल सकती है।
- ४०% अथवा उससे अधिक दिव्यांगता से असरग्रस्त व्यक्ति को इस पॉलिसी का लाभ मिल सकेगा।
- रू. २५०/- बी.पी.एल. एवं रु.५००/- ए.पी.एल. दिव्यांगो के लिए सिंगल प्रीमियम

लाभ

रु. १,००,०००/- तक का इंश्योरेंस मिल सकता है।
(निर्धारित किए हुए फंड के अनुसार)

आवेदन-पत्र के साथ जमा किए जाने वाले प्रमाण-पत्र/दस्तावेज

सिविल सर्फर का दिव्यांगता दर्शाता प्रमाण-पत्र

(ऊपर बताई गई चार बीमारियों में से किसी भी एक का उल्लेख प्रमाण-पत्र में जरुरी है)

- ✓ वर्तमान की पासपोर्ट साइज़ फोटो
- ✓ राशनकार्ड की प्रमाणित कोपी
- ✓ निवास स्थान का प्रमाण (राशनकार्ड अथवा वोटिंग कार्ड)
- ✓ बी.पी.एल. कार्ड (यदि बी.पी.एल. में आते हैं तो)
- ✓ बैंक पासबुक की फोटो कोपी (बैंक IFSC कोड के साथ)

संपादकीय

'कोई हाथ नहीं, कोई पैर नहीं, कोई बहाना नहीं' : काइल मेनार्ड नामक प्रसिद्ध व्यक्ति के जीवन की संघर्ष पूर्ण सच्ची कहानी इस अंक में आप पढेंगे । अपने जीवन के सब से कठिन और संघर्षपूर्ण समय में भी जीवन को आगे बढ़ाने का अवसर कैसे प्राप्त करना चाहिए इसकी अद्भुत कथा हमें यहाँ दिखती है । हर मनुष्य के जीवन में संघर्ष होता है किंतु उस संघर्ष को अवसर में बदलने की जो चाह रखता है वही संसार में वाह पाता है ।

काइल मेनार्ड ऐसा ही एक व्यक्ति है जो बिना हाथ और पैर के विश्व की सब से ऊंची चोटी पर पहुंच पाया था । किलिमांजारों की गणना विश्व से सब से ऊंचे शिखरों में होती है और वहाँ दिव्यांग तो क्या कोई चुस्त-दुरस्त मनुष्य भी जाने के बारे में सोचता नहीं है । किंतु ऐसे असंभव कार्य को कर के काइल मेंनार्ड ने पूरे संसार को संदेश दिया है कि "अगर हम सिर्फ़ उसी पर अड़े रहते हैं जो हम जानते हैं, तो हम आगे नहीं बढ़ सकते। मैं पहले कहा करता था कि कुछ भी संभव है, लेकिन मैं वास्तव में ऐसा नहीं मानता। मेरा मानना है कि इसे कहने का एक बेहतर तरीका यह है कि अपनी सीमाओं को जानें लेकिन उन्हें तोड़ने की कोशिश करना कभी न छोड़ें। लेकिन विडंबना यह है कि ऐसा तभी होता है जब आप अपनी सीमाओं को नहीं जानते।"

अपनी सीमाओं को तोड़कर आगे बढ़ने वाले ऐसे वीर को हम नमन करते हैं और शुभकामनाएं देते हैं । साथ ही हमारी संस्था के जिन दिव्यांग बच्चों ने राज्य स्तरीय विशेष खेल महाकुंभ में श्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए जो उपलब्धियां हासिल की है उसके लिए उन्हें शुभाशीष और अभिनंदन देते हैं ।

दिव्यांग सेतु

मासिक पत्रिका

जून : 2025, पृष्ठ संख्या : 16
वर्ष-6 अंक : 101

प्रेरणास्त्रोत और संपादक

मंत्रयुगपरिवर्तक ॐकार महामंडलेश्वर १००८
प. पू. संतश्री सद्‌गुरु ॐऋषि स्वामी ।

सह-संपादक

मिहिरभाई शाह

मो. 97241 81999

संपर्क-सूत्र

सेवा समर्पण फाउण्डेशन

ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट (NGO)

Trust Reg. No. : E/20646/Ahmedabad

०१, ग्राउण्ड फ्लोर, आंगी एपार्टमेन्ट,

अन्नपूर्णा पार्टी प्लाट के सामने,

नया विकासगृह रोड, पालडी,

अहमदाबाद - ३८०००९

(मो.) 99749 55365, 9974955125

मुद्रक

प्रिन्ट विज़न प्रा. लि.

आंबावाडी बाज़ार, अहमदाबाद-6

Phone : 079 26405200

'कोई हाथ नहीं, कोई पैर नहीं, कोई बहाना नहीं' : काइल मेनार्ड

" जिस तरह से मेरा जन्म हुआ वह मेरे लिए अब तक का सबसे बड़ा उपहार था " : काइल मेनार्ड अपनी उपलब्धियों और विकलांगता के साथ जीवन जीने के बारे में बताते हैं।

ऐसा अक्सर नहीं होता कि आप ऐसे लोगों से मिलें जो वाकई आपको यह कहने पर मजबूर कर दें: " वाह ! यह वाकई अद्भुत है ।" जब मैंने काइल मेनार्ड को खोजा तो यह एक जबरदस्त भावना थी जिसका मैंने अनुभव किया।

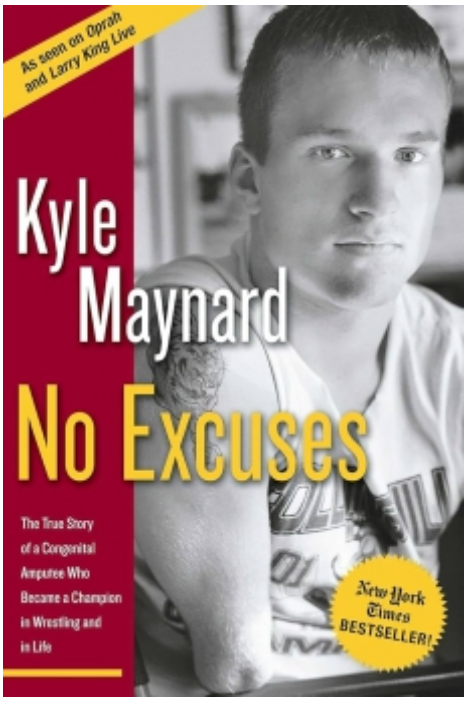

2 5 वर्षीय काइल मेनार्ड जन्मजात दोष के कारण चार पैरों से अपंग हो गए, लेकिन यह उन्हें सबसे कठिन शारीरिक चुनौतियों में से एक का सामना करने से नहीं रोक सका - माउंट किलिमंजारो पर लगभग 20,000 फुट की चढ़ाई। मेनार्ड का जन्म जन्मजात विच्छेदन नामक एक दुर्लभ बीमारी के साथ हुआ था, जिसमें भ्रूण के अंगों के विकास में रेशेदार पट्टियां बाधा उत्पन्न करती हैं, जिसके कारण उसके हाथ कोहनी पर समाप्त हो जाते हैं और पैर घुटनों पर समाप्त हो जाते हैं। लेकिन इन स्पष्ट प्रतिबंधों के बावजूद, मेनार्ड ने छोटी उम्र से ही खेलों में गहरी रुचि ली और 11 वर्ष की आयु में, वह वास्तव में अपनी स्थानीय अमेरिकी फुटबॉल टीम, कोलिन्स हिल नेशनल ईगल्स के लिए नोज़ टैकल खेल रहे थे। हाई स्कूल में पढ़ाई के दौरान मेनार्ड में खेलों के प्रति प्रेम विकसित हुआ।

उन्होंने उच्च स्तर पर कुश्ती लड़ी और 103 पाउंड भार वर्ग में 12वें स्थान पर रहे तथा कठिन प्रशिक्षण के बाद वे 23 बार 240 पाउंड का बेंच प्रेस करने में सफल रहे, जिसके लिए उन्हें जीएनसी के विश्व के सबसे मजबूत किशोर की उपाधि से सम्मानित किया गया।

मेनार्ड ने कहा, "जिस तरह से मेरा जन्म हुआ, वह मेरे लिए अब तक का सबसे बड़ा उपहार था, लेकिन मैंने हमेशा इसे इस तरह से नहीं देखा। इसकी शुरुआत मेरे माता-पिता और कोचों से हुई, जिन्होंने मुझे प्रेरित किया और मुझे बचपन में नई चीजें आजमाने के अवसर दिए।"

युवावस्था में शारीरिक खेलों के प्रति अपने प्रेम की

खोज के बाद, उन्होंने 2005 में मिश्रित मार्शल आर्ट (एमएमए) में प्रशिक्षण लेना शुरू किया, लेकिन जब उन्होंने 2007 में लड़ाकू लाइसेंस के लिए आवेदन किया, तो जॉर्जिया एथलेटिक और मनोरंजन आयोग ने उन्हें इससे वंचित कर दिया।

इसलिए, उन्होंने अलबामा में लड़ने का निर्णय लिया, जहां लड़ाई विनियमित नहीं है और 25 अप्रैल 2009 को उन्होंने ब्रायन फ्राई के खिलाफ लड़ाई लड़ी और जजों के 30-27 के निर्णय से हार गए।

मेनार्ड ने अपने पालन-पोषण के बारे में कहा: "मेरे बड़े होने का अधिकांश उद्देश्य खेलों के इर्द-गिर्द घूमता था।

"हर व्यक्ति के लिए चीजें अलग-अलग होंगी, लेकिन जीवन आसान नहीं है और हम जो कठिन काम करते हैं और अंततः सफल होते हैं या पूरा करते हैं, वही इसे विशेष बनाता है।"

उनके जीवन के प्रारंभिक वर्षों में ये सभी आश्चर्यजनक उपलब्धियां किसी की नजर से छिपी नहीं रहीं

हालांकि मेनार्ड की भुजाएं कोहनी पर खत्म हो जाती हैं और पैर घुटनों पर रुक जाते हैं, लेकिन वह अफ्रीका की सबसे ऊंची चोटी पर चढ़ने के लिए किसी सहायक उपकरण का इस्तेमाल नहीं किया। उन्होंने अपने अंगों के सिरों पर भारी ड्यूटी टेप से चिपके साइकिल टायर के टुकड़ों का इस्तेमाल करके ही चढ़ाई की।

मेनार्ड ने बताया, "यह कुछ ऐसा है जिसे मैं वर्षों से करना चाहता था, क्योंकि इसमें चुनौती का स्तर बहुत बड़ा है। कोई काम जितना कठिन होता है, उसे पूरा करने के बाद अनुभव उतना ही बेहतर होता है।"

मेनार्ड ने एक प्रेरक वक्ता के रूप में विश्व की यात्रा की है, एक मिश्रित मार्शल कलाकार और पहलवान के रूप में प्रतिस्पर्धा की है तथा सुवानी, जॉर्जिया में उनका अपना क्रॉस फिट जिम भी है, लेकिन उनका कहना है कि किलिमंजारो उनके द्वारा अब तक किए गए सबसे कठिन कार्यों में से एक है।

चढ़ाई के पीछे मुख्य मिशन विकलांग सैनिकों और दुनिया भर के विकलांग बच्चों को "संदेश भेजना" था, " ताकि यह दिखाया जा सके कि जीवन में चुनौतियां हैं, लेकिन इसका

मतलब यह नहीं है कि आप हार मान लें। आप खुद तय करें कि आप अपने जीवन में आने वाली चुनौतियों से कैसे अर्थ निकालेंगे।"

चढ़ाई करने वाली टीम में कई ऐसे अनुभवी सैनिक शामिल थे जो शारीरिक विकलांगता, दर्दनाक मस्तिष्क की चोट या पोस्ट ट्रॉमेटिक स्ट्रेस डिसऑर्डर से पीड़ित हैं । मेनार्ड बताते हैं कि घायल अनुभवी सैनिकों ने उनके जीवन पर "बहुत बड़ा प्रभाव" डाला है । वह मिशन की वेबसाइट पर लिखते हैं: "मैं उन लोगों के लिए चढ़ाई कर रहा हूँ जो महसूस कर सकते हैं कि उनके जीवन में कितनी संभावनाएँ हैं । मैं अपने नायकों - संयुक्त राज्य अमेरिका की सशस्त्र सेना के पुरुषों और महिलाओं को श्रद्धांजलि देने के लिए चढ़ाई कर रहा हूँ जिन्होंने मेरी स्वतंत्रता को बनाए रखने के लिए बहुत कुछ त्याग किया है ।"

मेनार्ड के पिता सेना में थे और मेनार्ड खुद को सेना में भर्ती करने के सपने लेकर बड़े हुए । "लेकिन मेरे लिए यह संभव नहीं था," वे कहते हैं। इसके बजाय, दिग्गजों और शारीरिक या मानसिक रूप से विकलांग बच्चों की ओर से प्रेरक भाषण देना और जागरूकता बढ़ाना उनके लिए "सेवा करने का अवसर" बन गया है ।

पैर नहीं तो समस्या नहीं

मेनार्ड किलिमंजारो पर्वत पर चढ़ने वाले पहले विकलांग व्यक्ति नहीं हैं - जुलाई में, एबीसी न्यूज़ ने क्रिस वाडेल की कहानी को कवर किया, जो एक पैराप्लेजिक व्यक्ति हैं, जिन्होंने 2009 में अपनी चढ़ाई को 2010 की डॉक्यूमेंट्री "वन

सक्षम बनाती है, वाडेल ने बताया कि वह विकलांग लोगों की धारणा को बदलने के लिए किलिमंजारो पर चढ़ना चाहते थे।

वे कहते हैं कि "एक क्रांति यह विचार है कि कोई छोटी सी बात, क्रैंक का एक मोड़, किसी बड़ी चीज़ की ओर ले जा सकता है।" "उम्मीद है, यह किसी और चीज़ की ओर ले जाएगा, इस विचार की ओर कि हम खुद को कैसे देखते हैं।"

रिवोल्यूशन" में दर्ज किया था । अपनी चढ़ाई से दो दशक पहले स्कीइंग दुर्घटना के बाद वाडेल अपने पैरों का इस्तेमाल नहीं कर पाए थे, लेकिन उन्होंने मोनो-स्की का उपयोग करके स्कीइंग जारी रखी और अमेरिकी पैरालिंपिक में सबसे सम्मानित एथलीट बन गए।

एक ऐसी हैंडसाइकिल का उपयोग करते हुए, जो उन्हें केवल अपने ऊपरी शरीर की शक्ति का उपयोग करके उबड़-खाबड़ रास्ते पर चढ़ने में

मेनार्ड ने अपने जीवन में कुछ असाधारण उपलब्धियां हासिल की हैं, जिनमें हाई स्कूल के अपने अंतिम वर्ष में 36 कुश्ती मैच जीतना, माउंट किलिमंजारो पर चढ़ना और राष्ट्रीय कुश्ती हॉल ऑफ फेम में शामिल होना शामिल है। और वह चार पैरों से विकलांग होने के बावजूद इन अविश्वसनीय ऊंचाइयों तक पहुंचे हैं।

जैसा कि मैंने पहले ही उल्लेख किया है, उन्हें रेसलिंग हॉल ऑफ फेम में शामिल किया गया है, उन्हें स्पोर्ट्स ह्यूमैनिटेरियन हॉल ऑफ फेम के लिए 2004 के राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित किया

गया था और उनके बारे में एक वृत्तचित्र, ए फाइटिंग चांस , बनाया गया है, जिसकी डीवीडी की बिक्री से प्राप्त आय का एक हिस्सा घायल दिग्गजों को लाभ पहुंचाने के लिए दिया गया है ।

लेकिन यकीनन मेनार्ड की सबसे बड़ी उपलब्धि यही है कि वह पूरी तरह से जनता के ध्यान में आ गए ।

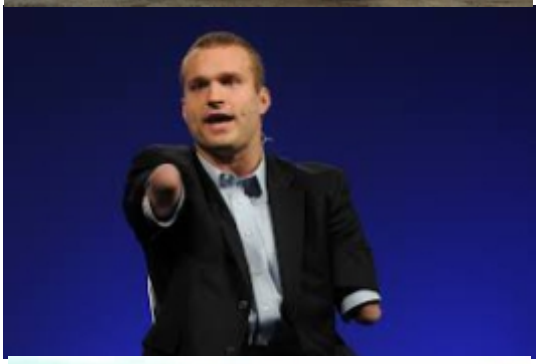

2011 में शुरू हुई इस परियोजना में मेनार्ड कृत्रिम अंगों की सहायता के बिना माउंट किलिमंजारो पर चढ़ने वाले पहले चार विकलांग व्यक्ति बने।

उन्होंने इसके लिए सह-नेता डैन एडम्स के साथ संयुक्त राज्य अमेरिका में विभिन्न स्थानों पर प्रशिक्षण लिया और ऐसे उपकरण विकसित किए जो मेनार्ड को चढ़ाई के दौरान निशाना बना सकें ।

आदर्श उपकरण खोजने के लिए उन्होंने जो प्रक्रियाएं अपनाईं, उनमें वेल्डेड स्लीव्स और रबर साइकिल टायर को भारी-भरकम टेप से उसके शरीर से जोड़ना शामिल था ।

15 जनवरी 2012 को मेनार्ड केवल 10 दिनों में 19,340 फीट की ऊंचाई तय करके किलिमंजारो की चोटी पर पहुंचे ।और मेनार्ड स्वीकार करते हैं कि किलिमंजारो पर चढ़ना अब तक का उनका सबसे बेहतरीन पल था । उन्होंने कहा: "मेरे जीवन का सबसे बड़ा सम्मान कोरी जॉनसन, एक शहीद अमेरिकी सैनिक की अस्थियों को किलिमंजारो की चोटी पर ले जाना और उन्हें और उनके द्वारा किए गए सर्वोच्च बलिदान को श्रद्धांजलि देना था।"

उन्हें विश्व द्वारा एक बार फिर सम्मानित किया गया, जब उन्हें विकलांगता वाले सर्वश्रेष्ठ पुरुष एथलीट के लिए दूसरी बार ईएसपीवाई पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।

ओपरा विन्फ्रे ने उन्हें "सबसे प्रेरणादायक युवा पुरुषों में से एक कहा, जिनके बारे में आपने कभी सुना होगा ।"

अर्नोल्ड श्वार्जनेगर ने उन्हें “असली सौदा”, “एक चैंपियन इंसान” और “अब तक मिले सबसे प्रेरणादायक लोगों में से एक” के रूप में वर्णित किया। यहां तक कि वेन ग्रेट्ज़की ने भी काइल की “महानता” के बारे में बात की है ।

लेकिन काइल मेनार्ड को अपने जीवन में अब तक मिली इतनी सफलता के बावजूद, एक साधारण वाक्य है जो उन्हें इन खगोलीय ऊंचाइयों तक पहुंचने में मदद करता है।

"मैं बड़े लक्ष्य निर्धारित करता हूँ और उन्हें प्राप्त करने के लिए अपना सर्वस्व लगा देता हूँ।"

"अगर हम सिर्फ़ उसी पर अड़े रहते हैं जो हम जानते हैं, तो हम आगे नहीं बढ़ सकते। मैं पहले कहा करता था कि कुछ भी संभव है, लेकिन मैं वास्तव में ऐसा नहीं मानता। मेरा मानना है कि इसे कहने का एक बेहतर तरीका यह है कि अपनी सीमाओं को जानें लेकिन उन्हें तोड़ने की कोशिश करना कभी न छोड़ें। लेकिन विडंबना यह है कि ऐसा तभी होता है जब आप अपनी सीमाओं को नहीं जानते।"

कोई बहाना नहीं

2005 में, मेनार्ड ने न्यूयॉर्क टाइम्स की बेस्टसेलिंग आत्मकथा लिखी, नो एक्सक्यूज़: द टू स्टोरी ऑफ़ ए कंजेनिटल एम्प्यूटी हू बिकेम अ चैंपियन इन रेसलिंग एंड इन लाइफ़ । रेगनेरी पब्लिशिंग द्वारा प्रकाशित, पुस्तक ने न्यूयॉर्क टाइम्स बेस्टसेलर सूची में जगह बनाई, जो 12वें स्थान पर पहुँची। कुछ ही समय बाद, उन्हें जॉर्जिया स्टेट रेसलिंग हॉल ऑफ़ फ़ेम और ओक्लाहोमा में नेशनल रेसलिंग हॉल ऑफ़ फ़ेम दोनों में शामिल किया गया। 2007 में, उन्हें यूएस जेसीज़ टॉप टेन आउटस्टैंडिंग यंग अमेरिकन्स में से एक नामित किया गया था। 2017 में, मेनार्ड को DIVERSEability पत्रिका के फ़ॉल 2016 अंक के कवर पर दिखाया गया था।

काइल की कहानी हमें याद दिलाती है कि जब तक हम प्रयास नहीं करते और प्रयास नहीं करते, तब तक हमें पता नहीं चलता कि हम क्या करने में सक्षम हैं।

★★★

राज्य स्तरीय स्पेशियल खेल महाकुंभ में मनोदिव्यांग बच्चों का श्रेष्ठ प्रदर्शन

हिंमतनगर में आयोजित राज्य स्तरिय स्पेशल खेल महाकुंभ में अहमदाबाद स्थित नवजीवन चेरीटेबल ट्रस्ट संचालित डॉ.हरिकृष्ण डाह्याभाई स्वामी स्कूल फोर मेन्टली डिसेबल्ड के १० छात्र अहमदाबाद जिल्ले की टीम में चयनित हुए थे । इन बच्चों ने हिंमतनगर में आयोजित विभिन्न खेलकूद स्पर्धाओं में अपना श्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए ५ छात्र विजेता घोषित हुए थे । इन बच्चों ने समग्र राज्य में अहमदाबाद जिले और संस्था का नाम रोशन किया है । नवजीवन ट्रस्ट विजेता बच्चों को तथा प्रतिभागी बच्चों को भी अभिनंदन और बधाई देता है ।

विजेता छात्रों के नाम:

1. धार्मिक शाह ५०० मीटर और १ किमी सायकलिंग स्पर्धा में तृतीय स्थान प्राप्त कर कांस्यपदक विजेता हुए ।
2. हर्ष जाडावाला – हेन्डबोल में द्वीतिय स्थान प्राप्त कर रजतचंद्रक विजेता घोषित हुए
3. मन ठाकर क्रिकेच प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त कर सुवर्ण पदक विजेता घोषित हुए तथा फूटबोल में प्रथम स्थान प्राप्त कर सुवर्ण पदक विजेता घोषित हुए ।
4. प्रियल शाह १०० मीटर तथा ३०० मीटर स्केटिंग में प्रथम स्थान प्राप्त कर सुवर्ण पदक विजेता घोषित हुए ।
5. रिधम शाह बोसी प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त कर सुवर्ण पदक विजेता घोषित हुए ।

समग्र नवजीवन परिवार प्रतियोगिता में विजेता बच्चों को अभिनंदन देता है और उनके उज्जवल भविष्य की कामना करता है ।

दिव्यांग बच्चों के लिए आयोजित हुई चित्र स्पर्धा

ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट द्वारा अहमदाबाद में पालडी स्थित अन्नपूर्णा होल में ३ मई २०२५ के दिन चित्र स्पर्धा का आयोजन किया गया था । ओमकार पाउन्डेशन ट्रस्ट के संस्थापक और मेनेजींग ट्रस्टी श्री परम पूज्य संत श्री ओमऋषि द्वारा दीप प्राकट्य कर के कार्यक्रम का प्रारंभ किया गया था । इस चित्र स्पर्धा में ८० से भी अधिक दिव्यांग बच्चों ने हिस्सा लिया था । इस स्पर्धा में दिव्यांग बच्चों ने अपने भावों को पेपर पर बहुत अच्छी तरह से रेखांकित किया था । कई कलाकृतियों में बच्चों की इच्छाएँ, उनके मनोभाव, आदि बहुत अच्छी तरह से प्रकट हुए थे । प्रतियोगिता में हिस्सा लेने वाले सभी बच्चों को ड्रोइंग कीट गीफ्ट में दी गई थी । इस प्रतियोगिता में बच्चों की कला और उनके भीतर छुपी विशेषताएँ अच्छी तरह से झलक रही थी । इस प्रतियोगिता में निर्णायकों द्वारा तीन बच्चों को नंबर दिए गए थे । एक से तीन नंबर प्राप्त बच्चों को प्रतिभागी और नंबर प्राप्त प्रमाणपत्र दिए गए थे ।

इस कार्यक्रम में उपस्थित सभी के लिए उपहार का सुंदर आयोजन किया गया था । इस कार्यक्रम में सभी दिव्यांग बच्चों ने बड़े उत्साह के साथ हिस्सा लिया था ।

Divyang
Drawing Competition
3/5/2025, Sat
Organized by:
Trust (NGO)

मनोदिव्यांग बच्चों के लिए आयोजित क्राफ्ट वर्कशोप

नवजीवन चेरीटेबल ट्रस्ट संचालित डॉ.हरिकृष्ण डाह्याभाई स्वामी स्कूल फोर मेन्टली डिसेबल्ड अंतर्गत मनोदिव्यांग बच्चों के लिए समर केम्प में क्राफ्ट वर्कशोप का आयोजन किया गया था। इस वर्कशोप का उद्देश्य मनोदिव्यांग बच्चों को क्राफ्ट के विभिन्न मोडेल बनाना सिखाना तथा यह कला उनके जीवन में उपयोगी हो सके यह था। इस वर्कशोप में क्राफ्ट विशेषज्ञ श्री गौरांग शींदे ने २५ से अधिक मनोदिव्यांग छात्रों को क्राफ्ट की विभिन्न कलाकृतियां बनाना सिखाया था। विशेष रूप से ५०० से अधिक डेकोरेट किए गए कवर बनाए थे। इस वर्कशोप में सभी मनोदिव्यांग छात्रों ने पूरे उत्साह के साथ हिस्सा लिया।

मनोदिव्यांग बच्चों के लिए चक्षु निदान केम्प का आयोजन

मनोदिव्यांग बच्चों के लिए सदैव कार्यरत स्मित चाइल्ड एज्युकेशन ट्रस्ट अखबार नगर नवा वाडज द्वारा गुजरात राज्य के स्थापना दिन के उपलक्ष्य में मनोदिव्यांग बच्चों के लिए चक्षु निदान केम्प का आयोजन किया गया था । इस चक्षु निदान केम्प में सभी मनोदिव्यांग बच्चों की आँखों की जाँच की गई थी । केम्प में उपस्थित आँखों के डोक्टर द्वारा बच्चों की आँखों की संपूर्ण जाँच की गई और उचित सारवार भी दी गई थी । केम्प का लाभ लेने वाले बच्चों को आँखों का महत्व और उनके जतन के लिए क्या-क्या वश्यक कदम उठाने चाहिए इसके बारे में भी विस्तृत जानकारी दी गई थी । स्मित चाइल्ड एज्युकेशन सभी आँख विशेषज्ञ डोक्टरों का धन्यवाद करता है ।

Karma Associates

TATA AIA LIFE INSURANCE

TATA AIG INSURANCE

"All insurance in one umbrella."

Book your Appointment:

Bhavin Shah - 99255 94767 | Priti Vora - 99241 99190

karmaassociatesbhavinshah@gmail.com

Kalash Associates

- Car Loan
- Home Loan
- Business Loan
- Personal Loan
- Mortgage Loan
- Education Loan

Book your Appointment:

Jinal Joshi - 7575816434

kalashassociates87@gmail.com

Golden opportunity to join our business... 99255 94767

ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट

संचालित (N.G.O.)

ॐकार दिव्यांग ट्रेनींग डे-केर सेन्टर

मानसिक दिव्यांग बच्चों के लिए नि:शुल्क तालीम संस्था

▲ World Autisum Day ▲Table Tennis Competition ▲ Painting Competition ▲Sports Day Celebration
▲Rakshabandhan Celebration ▲ 15th August Celebration ▲Janmashtami Celebration
▲ Anand Niketan School Visit ▲ Picnic ▲ Traffic Awareness Program Navratri Celebration

★★★ शाला में प्रवेश के लिए संपर्क करें ★★★

सुमेल ५, हाउस नं.: ४८/डी, बिजनेस पार्क, चामुंडा ब्रीज कोर्नर,
असारवा, अहमदाबाद-३८००१६ मो.: 99749 55125, 99749 55365

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर